

तदा गजकुमारोसौ मुनीन्द्रो जिनतत्त्ववित्। तां वेदनां सुधीश्चित्ते गणयंश्च तृणोपमाम् ॥२५॥
 कृत्वा समाधिना कालं स्वर्गलोकं ययौ द्रुतम्। तत्र सौख्यं चिरंकालं भुञ्जानः सुखतः स्थितः ॥२६॥
 अहो सतां महाचित्रं चारित्रं भुवनोत्तमम्। क्व वेदनाभवद्भूरिः क्व समाधिः प्रशर्मदः ॥२७॥
 सकलभुवननाथश्रीजिनेन्द्रप्रणीतं विमलमुखनिवासं जैनधर्मं निशम्य।
 विशदतरमतीशः संयमी योऽत्र जातो भवतु गजकुमारः शान्तयेऽसौ मुनीन्द्रः ॥२८॥
 इति कथाकोशे गजकुमारमुनेः कथा समाप्ता।

६०. पणिकमुनेः कथा

श्रीजिनं शर्मदं नत्वा शान्तये सद्भिरर्चितम्। वक्ष्ये श्रीपणिकाख्यानं संक्षेपेण जगद्धितम् ॥१॥
 पुरे पणीश्वरे रम्ये प्रजापालो महीपतिः। श्रेष्ठी सागरदत्ताख्यः पणिका श्रेष्ठिनी प्रिया ॥२॥
 तयोः पुत्रः पवित्रात्मा संजातः पणिकाभिधः। सुधीः सन्मार्गसंसक्तो विरक्तः पापकर्मणि ॥३॥
 एकदा पणिको धीमान्बद्धमानजिनेशिनः। समवादिसृतिं प्राप्य प्रोल्लसद्रत्नतोरणाम् ॥४॥

लोहे के बड़े-बड़े कीले ठोककर चलता बना। गजकुमार मुनि पर उपद्रव तो बड़ा ही दुःसह हुआ, पर वे जैनतत्त्व के अच्छे अभ्यासी थे, अनुभवी थे, इसलिए उन्होंने इस घोर कष्ट को एक तिनके के चुभने की बराबर भी न गिन बड़ी शान्ति और धीरता के साथ शरीर छोड़ा। यहाँ से ये स्वर्ग में गए। वहाँ अब चिरकाल तक वे सुख भोगेंगे। अहा! महापुरुषों का चरित बड़ा ही अचंभा पैदा करने वाला होता है। देखिये, कहाँ तो गजकुमार मुनि का ऐसा दुःसह कष्ट और कहाँ सुख देने वाली पुण्य-समाधि! इसका कारण सच्चा तत्त्वज्ञान है। इसलिए इस महत्ता को प्राप्त करने के लिए तत्त्वज्ञान का अभ्यास करना सबके लिए आवश्यक है ॥२३-२७॥

सारे संसार के प्रभु कहलाने वाले जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा सुख के कारण धर्म का उपदेश सुनकर जो गजकुमार अपनी दुर्बुद्धि को छोड़कर पवित्र बुद्धि के धारक और बड़े भारी सहनशील योगी हो गए, वे हमें भी सुबुद्धि और शान्ति प्रदान करें, जिससे हम भी कर्तव्य के लिए कष्ट सहने में समर्थ हो सकें ॥२८॥

६०. पणिक मुनि की कथा

सुख के देने वाले और सत्पुरुषों से पूजा किए गए जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर श्री पणिक नाम के मुनि की कथा लिखी जाती है, जो सबका हित करने वाली है ॥१॥

पणीश्वर नामक शहर के राजा प्रजापाल के समय वहाँ सागरदत्त नाम का एक सेठ हो चुका है। उसकी स्त्री का नाम पणिका था। उसका एक लड़का था। उसका नाम पणिक था। पणिक सरल, शान्त और पवित्र हृदय का था। पाप कभी उसे छू भी न गया था। सदा अच्छे रास्ते पर चलना उसका कर्तव्य था। एक दिन वह भगवान् के समवसरण में गया, जो कि रत्नों के तोरणों से बड़ी

मानस्तंभादिसद्भूत्या जगच्चेतोनुरंजनम्। तत्र गंधकुटीमध्ये त्रिपीठेषु निरंजनम् ॥५॥
 कनत्काञ्चनसद्रत्नसिंहासनमधिष्ठितम्। पूर्णेन्दुकान्तिविद्वेषिछत्रत्रयविराजितम् ॥६॥
 तारहारोज्ज्वलैर्दिव्यैर्वीज्यमानं सुचामरम्। सूर्यकोटिप्रभाभारहारिसत्कान्तिमण्डितम् ॥७॥
 सर्वसन्देहविध्वंसिदिव्यध्वनिसमन्वितम्। दुन्दुभीनां महाध्वानर्भुवनत्रयशोभितम् ॥८॥
 इन्द्रनागेन्द्रचन्द्रार्कनरेन्द्राद्यैः समर्चितम्। निर्ग्रन्थादिगुणोपेतं भव्यसन्दोहसंस्तुतम् ॥९॥
 चतुस्त्रिंशन्महाश्चर्यै-भूषितं भुवनोत्तमम्। सच्चतुष्टयसंयुक्तं व्यक्तलोकत्रयक्रमम् ॥१०॥
 दृष्ट्वा श्रीवर्द्धमानाख्यं जिनेन्द्रं मुक्तिसत्प्रियम्। त्रिः परीत्य लसद्भक्त्या समभ्यर्च्य कृतश्रियम् ॥११॥
 नत्वा स्तुत्वा सतां स्तुत्यं धर्ममाकर्ण्य शर्मदम्। श्रुत्वास्तोकतरं स्वायुर्दीक्षामादाय निर्मदम् ॥१२॥
 एकाकी विहरन्नुच्चैस्ततोऽसौ पणिको मुनिः। गंगां नदीं समागत्य नौमध्ये चैकदा स्थितः ॥१३॥
 नौर्निमज्जति यावत्सा तावत्सोपि मुनीश्वरः। केवलज्ञानमुत्पाद्य सद्भ्यानान्मोक्षमाप्तवान् ॥१४॥

ही सुन्दरता धारण किए हुए था और अपनी मानस्तंभादि शोभा से सबके चित्त को आनन्दित करने वाला था। वहाँ उसने वर्धमान भगवान् को गंधकुटी पर विराजे हुए देखा। भगवान् की इस समय की शोभा अपूर्व और दर्शनीय थी। वे रत्न-जड़े सोने के सिंहासन पर विराजे हुए थे, पूनम के चन्द्रमा को शर्मिन्दा करने वाले तीन छत्र उन पर शोभा दे रहे थे, मोतियों के हार के समान उज्ज्वल और दिव्य चँवर उन पर ढुर रहे थे, एक साथ उदय हुए अनेक सूर्यों के तेज को जिनके शरीर की कान्ति दबाती थी, नाना प्रकार की शंकाओं को मिटाने वाली दिव्यध्वनि द्वारा जो उपदेश कर रहे थे, देवों के बजाये दुन्दुभि नाम के बाजों से आकाश और पृथ्वी मण्डल शब्दमय बन गया था। इन्द्र, नागेन्द्र, चक्रवर्ती, विद्याधर और बड़े-बड़े राजा-महाराजा आदि आ-आकर जिनकी पूजा करते थे, अनेक निर्ग्रन्थ मुनिराज उनकी स्तुति कर अपने को कृतार्थ कर रहे थे, चौंतीस प्रकार के अतिशयों से जो शोभित थे, अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्तसुख और अनन्तवीर्य ऐसे चार अनन्त चतुष्टय आत्म-सम्पत्ति को धारण किये थे, जिन्हें संसार के सर्वोच्च महापुरुष का सम्मान प्राप्त था, तीनों लोकों को स्पष्ट देख-जानकर उसका स्वरूप भव्य-जनों को जो उपदेश कर रहे थे और जिनके लिए मुक्ति-रमणी वरमाला हाथ में लिए उत्सुक हो रही थी। पणिक ने भगवान् का ऐसा दिव्य स्वरूप देखकर उन्हें अपना सिर नवाया, उनकी स्तुति-पूजा की, प्रदक्षिणा दी और बैठकर धर्मोपदेश सुना। अन्त में उसने अपनी आयु के सम्बन्ध में भगवान् से प्रश्न किया। भगवान् के उत्तर से उसे अपनी आयु बहुत थोड़ी जान पड़ी। ऐसी दशा में आत्महित करना बहुत आवश्यक समझ पणिक वहीं दीक्षा ले साधु हो गया। यहाँ से विहार कर अनेक देशों और नगरों में धर्मोपदेश करते हुए पणिक मुनि एक दिन गंगा किनारे आए। नदी पार होने के लिए वे एक नाव में बैठे। मल्लाह नाव खेये जा रहा था कि अचानक एक प्रलय की-सी आँधी ने आकर नाव को खूब डगमग कर दिया, उसमें पानी भर आया, नाव डूबने लगी। जब तक नाव डूबती है पणिक मुनि ने अपने भावों को खूब उन्नत

स श्रीवणिकमुतो धीमान्मेरुवन्निश्चलाशयः । कर्मसन्दोहशत्रुघ्नो दद्यान्मे शाश्वतीं श्रियम् ॥१५॥
श्रीमत्सागरदत्तनामपणिकासच्छ्रेष्ठिनीनन्दनः पूतात्मा पणिको विलोक्य शिवदं श्रीवर्द्धमानं जिनम् ।
ज्ञात्वा स्वल्पतरं निजायुमखिलं त्यक्त्वा च मोहादिकं भूत्वा यस्तु मुनिः स मुक्तिमगमन्नित्यं सुखं मे क्रियात् ॥१६॥

इति कथाकोशे श्रीपणिकमुनेः कथा समाप्ता ।

६१. श्रीभद्रबाहुमुनेः कथा

नत्वा जिनं जगद्भद्रं सुरासुरनमस्कृतम् । भद्रबाहोर्मुनीन्द्रस्य चरित्रं कथ्यते हितम् ॥१॥
पुण्ड्रवर्द्धनसद्वेशे कोटीसन्नगरे वरे । राजा पद्मरथो धीमान्सोमशर्मा पुरोहितः ॥२॥
श्रीदेवी भामिनी तस्य तयोः पुत्रो बभूव च । भद्रबाहुर्गुणैर्भद्रो भद्रमूर्तिर्भवोत्तमः ॥३॥
एकदा प्रौढबालोऽसौ मौंजीबन्धे कृते सति । क्रीडां कुर्वन्पुत्रीबाह्ये भूरिबालजनैः सह ॥४॥
तत्र क्रीडाविधौ धीमान्गोलकांश्च त्रयोदश । क्रमेणोपरि संचक्रे बुद्ध्या हस्तकलान्वितः ॥५॥

किया । यहाँ तक कि उन्हें उसी समय केवलज्ञान हो गया और तुरन्त ही वे अघातिया कर्मों का नाश कर मोक्ष चले गए । वे सेठ पुत्र पणिक मुनि मुझे भी अविनाशी मोक्ष-लक्ष्मी दें, जिन्होंने मेरे समान स्थिर रहकर कर्म शत्रुओं का नाश किया ॥२-१५॥

सागरदत्त सेठ की स्त्री पणिका सेठानी के पुत्र पवित्रात्मा पणिक मुनि, वर्धमान भगवान् के दर्शन कर, जो कि मोक्ष के देने वाले हैं और उनसे अपनी आयु बहुत थोड़े जानकर संसार की सब माया-ममता छोड़ मुनि हो गए और अन्त में कर्मों का नाश कर मोक्ष गए, वे मुझे भी सुखी करें ॥१६॥

६१. भद्रबाहु मुनिराज की कथा

संसार का कल्याण करने वाले और देवों द्वारा नमस्कार किए गए श्रीजिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर पंचम श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहु मुनिराज की कथा लिखी जाती है, जो कथा सबका हित करने वाली है ॥१॥

पुण्ड्रवर्द्धन देश के कोटीपुर नामक नगर के राजा पद्मरथ के समय में वहाँ सोमशर्मा नाम का एक पुरोहित ब्राह्मण था । इसकी स्त्री का नाम श्रीदेवी था । कथा-नायक भद्रबाहु इसी के लड़के थे । भद्रबाहु बचपन से ही शान्त और गम्भीर प्रकृति के थे । उनके भव्य चेहरे को देखने से यह झट से कल्पना होने लगती थी कि ये आगे चलकर कोई बड़े भारी प्रसिद्ध महापुरुष होंगे क्योंकि यह कहावत बिल्कुल सच्ची है कि “पूत के पग पालने में ही नजर आ जाते हैं ।” अस्तु ॥२-३॥

जब भद्रबाहु आठ वर्ष के हुए और इनका यज्ञोपवीत और मौंजीबन्धन हो चुका था तब एक दिन की बात है कि ये अपने साथी बालकों के साथ खेल रहे थे । खेल था गोलियों का । सब अपनी-अपनी होशियारी और हाथों की सफाई से गोलियों को एक पर एक रखकर दिखला रहे थे ।